

लोकतंत्र को कमजोर करता भ्रष्टतंत्र

रुपये आंका गया है, जबकि इन्हें खरीदने में लगभग 11.57 करोड़ रुपये खर्च किए गए थे. सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि सरकारी सेवा में रहते हुए कोई कर्मचारी कथित तौर पर इतनी बड़ी संपत्ति कैसे जुटा सकता है ? यदि किसी पुलिसकर्मी की आय और उसकी संपत्ति के बीच इतना बड़ा अंतर सामने आता है, तो सवाल केवल संबंधित व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता. यह भी जांच का विषय बनता है कि उसकी गतिविधियों पर निगरानी रखने वाले अधिकारी क्या कर रहे थे ? संपत्ति अर्जित करने के लिए यदि फर्जी फर्मा, दूसरे व्यक्तियों के नाम और संदिग्ध जमीन सौदों का इस्तेमाल किया गया, तो संबंधित विभागों की निगरानी व्यवस्था कहाँ थी ? सरकारी कर्मचारियों को मिलने वाला वेतन जनता के करों से आता है. इसके बदले

उन्से ईमानदारी, निष्पक्षता और कानून के प्रति निष्ठा की अपेक्षा की जाती है. पुलिस जैसे विभाग में यह जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि आम नागरिक अपनी सुरक्षा और न्याय के लिए इसी व्यवस्था पर निर्भर रहता है. यदि कानून के रखवाले ही अपने पद का दुरुपयोग करने लगे, तो आम आदमी का भरोसा किस पर टिकेगा ?

बहरहाल, इस मामले में लोकायुक्त की कार्रवाई स्वागत योग्य है. लेकिन छापेमारी और संपत्ति का खुलासा ही पर्याप्त नहीं है. जांच को तार्किक परिणति तक पहुंचाना, संपत्तियों के वास्तविक स्रोत का पता लगाना, संदिग्ध लेनदेन की पड़ताल करना और दोष सिद्ध होने पर कानून के अनुसार कठोर कार्रवाई करना आवश्यक है. यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी कर्मचारी की संदिग्ध

गतिविधियों की जानकारी सामने आने पर विभागीय स्तर पर समय रहते कार्रवाई हो. जिन अधिकारियों ने निगरानी में लापरवाही की हो या किसी तरह की मिलीभगत की हो, उनकी भूमिका की भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए.

दरअसल, लोकतंत्र की मजबूती केवल चुनाव कराने और सरकारें बनाने से सुनिश्चित नहीं होती. उसकी असली ताकत उन संस्थाओं में होती है, जो निष्पक्षता और ईमानदारी से काम करती हैं. जब सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार से मुक्त होगा, दण्डियों को संरक्षण के बजाय दंड मिलेगा और जनता के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित होगी, तभी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर नागरिकों का भरोसा मजबूत होगा. भ्रष्टाचार के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई किसी एक विभाग या व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई तक सीमित नहीं रहनी चाहिए. यह पूरे सिस्टम को जवाबदेह बनाने का अभियान होना चाहिए. आखिरकार, ईमानदार व्यवस्था ही मजबूत लोकतंत्र की बुनियाद है.

आसमान छूते हवाई किराए का निदान क्या है?

देश में हवाई जहाज का किराया अपने उफान पर है. अभी त्योहारी सीजन में आवागमन के लिए हवाई परिवहन की मांग ज्यादा हो जाती है. इन परिस्थितियों में विमानन कंपनियों ने हवाई टिकट की मांग और आपूर्ति के बीच व्यास असंतुलन का बेजा फायदा उठाने का प्रयास किया है. किराए में पहले बढ़ोतरी इंडिगो एयरलाइंस ने की इसके बाद एयर इंडिया, एयर इंडिया एक्सप्रेस और आकासा द्वारा अपने किराओं में बढ़ोतरी की घोषणा की गई. बढ़ोतरी को ईधन सरचार्ज के रूप में दर्शाया गया है. अभी एटीएफ की कीमतें 121 रुपये प्रति लिटर से बढ़कर 137 रुपये हो गई हैं. पहले से लगे ईंधन अधिभार को प्रयास 275 और अधिकतम 950 रुपये था, उसमें क्रमशः 100 रुपये से 350 रुपये की अतिरिक्त बढ़ोतरी हो गई है, अब कुल अधिभार 375 से 1300 रुपये के बीच हो गया है. घरेलू रूटों के अलावा अंतरराष्ट्रीय रूटों पर भी किराए में भारी बढ़ोतरी की गई है, जिसके अंतर्गत पश्चिमी एशिया रूट पर न्यूनतम 55 अमेरिकी डॉलर, यूरोपीय रूट पर 135, उत्तरी अमेरिकी रूट पर 215 और ऑस्ट्रेलियाई रूट पर 210 डॉलर की बढ़ोतरी की गई है.

कुल मिलाकर अंतरराष्ट्रीय रूट पर न्यूनतम 1 हजार से 10 हजार रुपये की बढ़ोतरी दर्ज हुई है. सबसे बड़ा सवाल यह है कि देश में विमान किराए को दीर्घकालीन तौर पर क्या एक नियत दर पर स्थिर नहीं



रखा जा सकता ? विमान यात्रा अब कोई विलासिता न होकर पेशेवर जीवन की एक सामान्य जरूरत बन गई है, तो वह लोगों के लिए किफायती होनी चाहिए. ईंधन किराए में बढ़ोतरी के इतर हवाई अड्डों पर एयरपोर्ट हैंडलिंग चार्ज की वजह से भी विमान किराए बढ़ाए जाते हैं. इसे लेकर सरकारी उपक्रम एयरपोर्ट अथॉरिटी पर भी आरोप लग रहे हैं.

दूसरा एटीसी यानी एयर ट्रैफिक कंट्रोल जो पूरे तौर पर सरकार के नियंत्रण में होता है, उसका भी शुल्क होता है. कुल मिलाकर ये सभी शुल्क विमान किराए में शामिल किए जाते हैं. विमान सेवाओं में फ्लेक्सी किराया प्रणाली अपनाए जाने की वजह से ऐन वक्त या आपातकाल में यात्रियों को ज्यादा किराया वहन करना पड़ता है. कई निजी कंपनियां भी घाटे और विवाद की वजह से बंद हुई हैं, जिनमें जेट, सहारा, किंगफिशर, गो एयर शामिल हैं. अभी देश में इंडिगो, स्पाइस, एयर इंडिया समूह विमान सेवा

नियामक प्राधिकरण गठित करें

अभी देश में हवाई यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या दुनिया में तीसरे नंबर पर है. कोरोना महामारी के पहले देश में 14.4 करोड़ लोगों ने विमान यात्राएं की जो रिकार्ड 2023 में 15.2 करोड़ यात्री के साथ टूटा. पर अभी अगस्त महीने में हवाई यात्रियों की संख्या में गिरावट दर्ज हुई है. जाहिर है हवाई यात्रियों के लिए हवाई किराए किफायती नहीं रह पा रहे हैं. नियामक प्राधिकरण की स्थापना हवाई यात्रियों के लिए एक न्यायसंगत माहौल उत्पन्न करेगी.

संचालन क्षेत्र में मौजूद हैं, जिनमें अकेले इंडिगो की हिस्सेदारी 60 फीसदी से ज्यादा है. देश में हवाई अड्डों का निर्माण तेजी से बढ़ा है. देश में अभी 165 हवाई अड्डे इस्तेमाल में हैं, जिनमें 32 हवाई अड्डे अंतरराष्ट्रीय हैं, करीब 30 हवाई अड्डे राज्य सरकारों और निजी कंपनियों के स्वामित्व में हैं. देश के बड़े हवाई अड्डे जिसमें दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चंडीगढ़, कन्नूर, नागपुर शामिल हैं, इनमें निजी क्षेत्र का स्वामित्व है. साथ ही सार्वजनिक उपक्रम भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण एएआई की हिस्सेदारी इनमें पहले 4 में महज क्रमशः 26, 26, 13 , 13 प्रतिशत है. चंडीगढ़ हवाई अड्डे में पंजाब सरकार के साथ मिलाकर एएआई की हिस्सेदारी 51 प्रतिशत, नागपुर में 49 और कन्नूर में महज 7.47 प्रतिशत है यानी नागरिक विमान सेवा का बड़ा सिमेंट पूरे तौर पर निजी हाथों में है. जबकि मध्यम और छोटे हवाई अड्डों का संचालन सरकारी

कंपनी एएआई के पास है, परंतु देश के बड़े हवाई अड्डे निजी स्वामित्व में हैं.

देश के अधिकतर नागरिकों को विमान सेवाओं से यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है और देश के दूरदराज क्षेत्रों में नागरिक विमान सेवा का विस्तार भी हो रहा है. देश को विकसित राष्ट्र बनाने में नागरिक उड्डयन की भूमिका को और विस्तृत करने की बात की जा रही है. ऐसे में देश में एक ऐसा नियामक प्राधिकरण, जो यात्री विमान किराए को औचित्यपरक और तार्किक बढ़ोतरी के अनुरूप रखे, बेहद जरूरी हो जाता है. जिनमें हवाई अड्डों की स्थापना, रखरखाव, देखरेख, विमान ट्रैफिक नियंत्रण और विमान ईंधन एटीएफ इन सभी पहलू की देखरेख इस नियामक प्राधिकरण के जिम्मे दी जाएंगी तो इस उद्योग से इसके उपभोक्ताओं का एक बेहतर संबंध विकसित होगा.

-मनोहर मनोज

निशानेबाज

मजबूत सुरक्षा करने का वादा, बनाने का इरादा घर को किला

पड़ोसी ने हमसे कहा, ‘निशानेबाज, हमने तय किया है कि अपने घर को सुधारकर रहेंगे. दिवाली आने से पहले सारा कबाड़ निकालकर खिड़की-दरवाजों को रंगरोगन से चमका लेते हैं. दीवारों पर नया प्लास्टिक इमल्शन पेंट चढ़ा देते हैं. ’

हमने कहा, ‘आपका घर अच्छ-भला है. उसे वैसा ही रहने दें. अभी आप खिड़की-दरवाजे की बात कर रहे हैं, कल चलकर छज्जे, अटारी, रोशनदान में हेरफेर करने की सोचेंगे. ’

पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज, बुजुर्गों ने समझाया है कि मजबूत किले के कंगूरे और बुर्ज की भी समय-समय पर मरम्मत करानी पड़ती है. चारदीवारी भी ऊँची करवानी करनी है. ’

हमने कहा, ‘यह किले और बुर्ज की बात कहाँ से आ गई ? कुछ वर्ष पहले आपने मिट्टी की ईंट को रामशिला कहा था, अब अपने मकान को किला कहने लगे. क्या उसे लालकिला बनाकर वहां से भाषण देने की सोच रहे हैं ? ’



पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज, समय के साथ चलना जरूरी होता है. केंद्र सरकार ने भी तो प्रदर्शनकारियों के खिलाफ किती जबरदस्त किलेबंदी की थी. राजस्थान के किले देखने विदेशी पर्यटक आया करते हैं. महाराष्ट्र में

मानसून के दगा दे जाने से उत्पन्न गंभीर सूखा स्थिति के साथ ही बढ़ती महंगाई से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है. रबी फसल को लेकर भी उम्मीद क्षीण होती जा रही है. गर्मियों में जलसंकट तीव्र होने की आशंका अभी से लोगों को हो चली है. देश में सितंबर 2026 की खुदरा महंगाई दर 5.54 प्रतिशत दर्ज

की गई जो कि अगस्त में 4.83 प्रतिशत थी. कूड़ ऑयल की बढ़ती कीमत तथा भू-राजनीतिक तनाव के अलावा ‘अल नीनो’ की वजह से हुई कम वर्षा का नतीजा यह है कि खाद्यान्न की महंगाई दर 7.74 प्रतिशत हो गई. ग्रामीण क्षेत्रों पर महंगाई का अधिक असर (6.08 प्रतिशत) पड़ा है. दाल व सब्जियां काफी महंगी हो गई हैं. मांग की तुलना में आपूर्ति कम है. एक माह में मोटे अनाज व चावल के दाम 10 से 15 प्रतिशत बढ़ गए हैं. प्याज-लहसुन जैसी रोजमर्रा की चीजें भी महंगी हो गई हैं. सीमित आय वाले मध्यम वर्ग की समस्या बढ़ गई है. उसे समझ में नहीं आ रहा कि क्या धोए और क्या निचोड़े ! महाराष्ट्र के 80 प्रतिशत इलाके में सूखा घोषित किया जा चुका है. न खेतों में अनाज है न जेब में पैसा. ग्रामीण जनता की बेबसी देखी नहीं



जाती. चारा उपलब्ध नहीं होने से किसान अपने पालतू मवेशी बेचने के लिए विवश हो गए हैं. निजी साहूकारों के यहां कर्ज मांगने वालों का ताता लग गया है. दिवाली निकट है लेकिन ग्रामीणजन अपना घर छोड़कर रोजगार के लिए शहरी की ओर पलायन कर रहे हैं. सूखा और महंगाई के इस दौर में प्रशासन को भी गईजो कि अगस्त में 4.83 प्रतिशत थी. कूड़ ऑयल की बढ़ती कीमत तथा भू-राजनीतिक तनाव के अलावा ‘अल नीनो’ की वजह से हुई कम वर्षा का नतीजा यह है कि खाद्यान्न की महंगाई दर 7.74 प्रतिशत हो गई. ग्रामीण क्षेत्रों पर महंगाई का अधिक असर (6.08 प्रतिशत) पड़ा है. दाल व सब्जियां काफी महंगी हो गई हैं. मांग की तुलना में आपूर्ति कम है. एक माह में मोटे अनाज व चावल के दाम 10 से 15 प्रतिशत बढ़ गए हैं. प्याज-लहसुन जैसी रोजमर्रा की चीजें भी महंगी हो गई हैं. सीमित आय वाले मध्यम वर्ग की समस्या बढ़ गई है. उसे समझ में नहीं आ रहा कि क्या धोए और क्या निचोड़े ! महाराष्ट्र के 80 प्रतिशत इलाके में सूखा घोषित किया जा चुका है. न खेतों में अनाज है न जेब में पैसा. ग्रामीण जनता की बेबसी देखी नहीं

संपादकीय बोर्ड

प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर

12410

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	4
		5		
6	7		8	9
10		11		
	12	13		
14	15		16	17
18	19	20		
21		22		

बाएं से दाएं

1. इस जन्म से पहले का जन्म, पिछला जन्म 3. बांसुरी, वंशी 5. प्रसन्नता तथा प्रशंसा प्रकट करने वाला शब्द 6. तांबे के रंग का 8. श्वेत, उज्जला, सफेद, निर्मल 10. घुंघरू का शब्द, पानी बरसने का शब्द 11. देवताओं की नगरी, इंद्रपुरी 12. सितार की तरह का एक बाजा, तबूरा 15. अविवाहित अवस्था में उत्पन्न कुंती का पुत्र 16. शोभा, चमक-दमक, प्रफुल्लता 18. ईरान की भाषा 20. साफ और सफेद रंग 21. गांव और कस्बे से बड़ी मनुष्यों की बस्ती 22. दन-दन शब्द सहित, लगातार

ऊपर से नीचे

1. बातचीत करके किसी विषय में खोज या जांच पड़ताल करना 2. मुंह के ऊपर-नीचे की वह हड्डियां जिनमें दांत उगे होते हैं 3. किसी विशिष्ट भाषा में प्रचलित वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षण या व्यंजनों द्वारा निकलता हो 4. किसी में समाया हुआ, तन्मय 5. मृत्प्राय, आधा मरा हुआ 6. स्नेह, मोह, अपना समझने का भाव 9. तल्लीन, मग्न 11. अधूरा, कम, जो पूरा न हो 13. गर्मी के दिनों में नाक से अपने आप रक्त बहने का रोग 14. उबाल, जोश 16. व्यर्थ प्रलाप करना, बकना 17. मुश्किल, कड़ा, सख्त 19. नस 20. उछल, क्रीड, अंचल

Solution 12409

पा	ब	न	पा	घ	ना	शी
म	रू		ग	ली	जु	
र	ण	वा	छ		श	क
				रा	शि	ति
प्र	ती	क			ध	मा
ति	र	पा	ल		र	त
का		स	क्ष	म		म
र	क्षा		धु	न		र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में सुधार होगा. पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. वर्ष के प्रारंभ में मित्रों व भाइयों से सहयोग कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी.दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा. लाभ होगा, वर्ष के अंत में विवाहित राजनीति का सामना करना होगा. मित्र एवं परिजनों से तनाव रहेगा. व्यापार में परिश्रम एवं व्यस्तता रहेगी.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में सुधार होगा. वृष और तुला

मेघ- अनावश्यक कार्यों में समय नष्ट होगा, किन्तु आपकी सुझबझ और सतर्कता से काम समलत जायेगा, कोई रुका कार्य बनेगा, शुभ सूचना मिलेगी.

वृषभ- सकारात्मक सोच से मामले सुलझेंगे, किसी मौलिक कार्य में आपकी उपस्थिति सुखद रहेगी, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी.

मिथुन- कामकाज पूरा होगा, कोर्ट कचहरी आदि के कार्यों में सलनता रहेगी, व्यवसाय व खरीदी के कार्यों में सतर्कता बर्कनीय, सम्मान मिलेगा.

कांक्षी- कुटुम्बियों से सुख एवं सहयोग मिलेगा, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, शुभ संदेश प्राप्त होने का योग.

सिंह- नये वाहन का सुख मिलेगा, पुन्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, उत्साह बढ़ेगा, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. नवीन योजना बनेगी.

कन्या- लेखनादि कार्यों में सफलता मिलेगी, मन में उत्साह बना रहेगा, वाद-विवाद से बचें, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, यश मिलेगा.

तुला- नया काम बनेगा, किसी तरह की चोट-मोच आदि से बचें, मौलिक कार्य की ओर रुझान रहेगी, लेनदेन में लापरवाही से हानि होगी.

वृश्चिक- शत्रुओं पर विजय मिलेगी, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त होगा, आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. यश मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सन्दर, सुशील, चंचल और आकर्षित व्यक्तित्व का होगा, अपने माता पिता का ध्यान रखेगा, स्वास्थ्य से चंचल और उग्र होगा, अपने मनमर्जी का मालिक होगा, व्यवसाय आदि में कार्यों में अच्छी रुचि रहेगी.

धनु- प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन की संभावना, आरोप प्रत्यारोप से बचें, पारिवारिक चिन्ता रहेगी, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे.

मकर- कोई महत्वपूर्ण समस्या दूर होगी, व्यापार लाभदायक रहेगा, खर्च की अधिकता होगी, बुजुर्ग के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है.

कुम्भ- राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, नौकरी में लाभ प्राप्त होगा, अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा, साहस संयम से काम करें.

मीन- लाभकारी प्रस्ताव मिलेंगे, कोई आपसी व्यक्ति आपको कृत्रिम कर सकता है, परिवर्तन के योग हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

9	8	के.7 सू. चं.यु.	6	सू.	5
			4		
10	श.				
11		1	रु.		3
	12	सू.	2		

पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2083 आश्विन शुक्ल षष्ठी भृगुवासरे रात 3/47, ज्येष्ठ नक्षत्रे प्रातः 6/21, शोभन योगे रात 10/31, कौलव करणे सू.उ. 6/16, सू.अ. 5/44, चन्द्रचार वृश्चिक प्रातः 6/21 से धनु. शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल षष्ठी को ज्येष्ठा नक्षत्र के से सोना, चांदी, धातु, आदि गेहूँ, जौ, मटर, ज्वार, में मंदी होगी, गुड़, खांड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग, में तेजी होगी. भाग्यांक 1408 है.

महाकौशल की डायरी

बालाघाट में बदलेंगे राजनीतिक समीकरण ...?



अविनाश दीक्षित

राजनीति में चर्चाएं, उम्मीदें और अंतिम निर्णय सदैव एक जैसे नहीं होते और ना ही आज की सहमति और कल के संबंध एक जैसे होते हैं, सारे समीकरण वक्त की नजाकत एवं परिस्थितियों पर निर्भर होते हैं. इन दिनों कुछ ऐसा ही परिदृश्य बालाघाट की राजनीति में नजर आ रहा है. दरअसल बालाघाट के भाजपाई गलियारे में डॉ. ढालसिंह बिसेन को उत्तराखंड का राज्यपाल बनाने जाने और जिले के क्षत्रप माने जाने वाले गौरीशंकर बिसेन के राजनीतिक भविष्य को लेकर चर्चाएं छिड़ी हुई हैं. केंद्र बिंदु में यह सवाल है कि गौरीशंकर बिसेन जिन्हें लोग गौरीभाऊ भी बोलते हैं, के लंबे राजनीतिक अनुभव और वरिष्ठता के बावजूद डॉ. ढालसिंह बिसेन को राज्यपाल के पद पहुंचने का अवसर कैसे मिल गया. ?

स्मरण रहे कि दशकों से बालाघाट के सियासी समीकरण गौरीभाऊ के ‘मूड’ पर बनते बिगड़ते रहे हैं. कभी टिकट बंटवारे से लेकर समुची चुनाव बिसात उनके नेतृत्व में भाजपा संगठन बिछला रहा है. गौरीभाऊ की पहचान मुखर नेता की रही है, सार्वजनिक मंचों से दिए गए उनके बयान हमेशा सुर्खियों में रहे, जिसको लेकर वह विवादित भी हुए. 2017 में

नजराना के बाद आखिर कैसे कर दें कार्रवाई ...?

महाकौशल, विंध्य के जिलों स.बड़ी तादाद में जबलपुर पहुंच रहा कबाड़ और फिर यहां आउटर के कबाड़खानों में प्रतिदिन करोड़ों के स्कूप को खपाना..इन दिनों चर्चाओं का विषय बना हुआ है .खबर है कि कटनी, रीवा, सतना, मंडला, डिंडौरी, नरसिंहपुर और दमोह सहित अन्य कई जिलों स .स्कूप जबलपुर पहुंचाया जा रहा है, जिनमें अलग-अलग जिलों स.चोरी हुई रेलव. की सामग्री, बिजली के तार, कृषि उपकरण और निर्माण सामग्री शामिल है .ऐसे. में सवाल उठन .शुरू हो चुके हैं कि जिलों में चोरी की घटनाओं में गायब होन .वाली सामग्री आखिर कहाँ खपती है और कबाड़ यादों तक पहुंचने के बाद उसकी पहचान कैसे .खत्म हो जाती है ? जब विंध्य के इलाकों स .होत .हुए जबलपुर सामान आ रहा है तो रास्त .में उसकी वैकिंग कहीं क्यों नहीं हुई ? अब तो कबाड़ के कारोबार में नकद लेन-देन और माल के दस्तावेजों को लेकर भी सवाल उठ रह .हैं .कुछ मामलों में ई-व .बिल और जीएसटी स .जुड़ .नियमों के पालन पर भी सवाल किए जा रह .हैं .जानकारी के मुताबिक जबलपुर में करीब 500 छोटे- बड़ .कबाड़ कारोबारियों/यादों का संचालन किया जा रहा है .नियमों की मानें तो कबाड़ कारोबारियों को माल बेचन .वाल .की पहचान, वाहन नंबर और माल के स्रोत जैसी जानकारी दर्ज रखना और यादें में निगरानी की व्यवस्था रखना जरूरी है, लेकिन फिलहाल इन नियमों का पालन होता नहीं नजर आ रहा है .सूत्रों की मान. तो आउटर इलाकों के दर्जनों यादों में चोरी की सामग्री और वाहन चंद घंट .में प्रतिदिन कट रह .हैं .सवाल तो पुलिस प्रशासन भी खड़ .होन .शुरू हो गए हैं क्योंकि बिना किसी मिलीभगत के य .इतना बड़ा काम संभव नहीं है .कहा जा रहा है नजराना की राशि आला अधिकारियों को मिटाई के डिब्बों में पहुंच जाती है और फिर शुरू होता है काल .कारोबार का साम्राज्य ..यही एक बड़ी वजह है जिस कारण कबाड़ियों पर बड़ .स्तर पर आज तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

छत्रपति शिवाजी महाराज के किले सभी के लिए गौरवपूर्ण हैं. दिवाली में बच्चे उत्साहपूर्वक मिट्टी का किला बनाते हैं. सुरक्षा के लिए किला बनवाना जरूरी माना जाता है. विदेश में भी शानदार किले हैं जो फोटो या कैसल कहलाते हैं. हमने कहा, ‘विमानों और ड्रोन के युग में किलों से सुरक्षा नहीं होती. अब किले इतिहास व पुरानी संस्कृति का अंग बनकर रह गए हैं. इसलिए किले जैसा मकान बनाने का इरादा छोड़ दीजिए. घर की सुरक्षा के लिए परिवार में एकता जरूरी है. आपने कहावत सुनी होगी ‘घर का भेदी लंका ढाए!’ जब चुनाव आता है तो सत्ताधीशों के मजबूत किले भी ताश के पत्तों की तरह ढह जाते हैं. इमरजेंसी के दौरान नारा लगा था- ‘सिंहासन खाली करो कि जनता आती है!’ इसलिए सत्ताधीशों को हमेशा जनसैलाब से डरना चाहिए. मनमानी और तानाशाही ज्यादा नहीं चलती. ऐसे किलों में दरार पड़ती देखी गई है. किलाबंदी करने की बजाय विपक्ष से समन्वय कर उदार नीति अपनाने में ही भलाई है. नफरत की बुनियाद पर खड़े किए गए किले कभी टिक नहीं पाते. ’

SUDOKU 7542

	8			6				
				5				
	9			7		3		
	1		8				2	
		7		4				
6		3		3		8		
5	7			4				
		8						
		1			6			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-टोकू 7541

9	5	3	1	8	7	6	2	
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7